ओ३म्

देहरादून। दिनांकः 11 अक्तूबर, 2014

प्रैस समाचार / विज्ञप्ति

––वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून के शरदुत्सव का चौथा दिन ––

‘हमारी बुद्धि तेजस्वी हो : डा. नन्दिता शास्त्री’

देहरादून 11 अक्तूबर। हम सब साधक और साधिकायें हैं। यजुर्वेद के एक मन्त्र में प्रार्थना की गई है कि हम घृताची बुद्धि को सिद्ध करने के लिये क्या उपाय करें। हमें ऐसी बुद्धि प्राप्त करनी है जो हमें घृत अर्थात् तेजस्विता को प्राप्त कराये। **यह विचार आर्य जगत की वेद विदुषी आचार्या डा. नन्दिता शास्त्री ने वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून के 5 दिवसीय शरदुत्सव के चौथे दिन के प्रथम सत्र में अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रस्तुत किये।** उन्होंने कहा कि साधारण भाषा में घृत का अर्थ घी होता है। मनुष्य का तेजस्वी बुद्धि से युक्त होना ही घृताची होना या घृत बुद्धि समान होना कहा गया है। विदुषी आचार्या ने कहा कि जल भी घृत है, इसलिये कि जल में विद्युत एवं तेजस्विता है। उन्होंने बताया कि जल से चिकित्सा भी की जाती है। आचार्या जी ने कहा कि जो व्यक्ति जल कम पीता है वह सूख जाता है। जब हम घृत के रूप में जल का पान करते हैं तो उससे हमारे भीतर तेजस्विता उत्पन्न होती है। आगे उन्होने कहा कि यदि विद्या में गति नहीं होगी तो उसमें दीप्ति नहीं होगी। विदुषी आचार्या ने कहा कि विद्या का जन सामान्य में वितरण करें जिससे बुद्धि में दीप्ति पैदा हो। उन्होंने कहा कि विद्या प्रवचन से बढ़ती है अन्यथा नष्ट हो जाती है। यदि हमारे आचरण में ज्ञान का व्यवहार नहीं है तो हमारी बुद्धि उपयोगी नहीं है। आचार्या जी ने मित्र व वरूण दो देवताओं की चर्चा कर कहा कि यह देवता हममें आभरण करने में समर्थ हैं। मित्र देवता हमें श्रेययुक्त करता है, श्रेय से बांधता है। उन्होंने बताया कि वायु व सूर्य भी मित्र शब्द के अर्थ हैं। वरूण हाइड्रोजन गैस है जिससे जल का निर्माण होता जब यह मित्र अर्थात् आक्सीजन से मिलता है। उन्होंने कहा कि मित्र अर्थात् आक्सीजन से हमारी रक्षा होती है। मित्र हमारे प्रति दूसरों की हिंसा से रक्षा करता है और साथ में हमारे आन्तरिक दोषों से भी रक्षा करता है। इसी प्रकार से सच्चा मित्र वह है जो हमें गलत कामों को करने से रोकता है। मित्र से हमें सद्विवेक या सद्बुद्धि की प्राप्ती होती है। मित्र अपने मित्र को हित के कार्यों में युक्त कर देता है। वरूण भी हमें दोषों व दुर्गुणों से मुक्त करता है। उन्होंने कहा कि ईश्वर मित्रों का मित्र है और वरूणों का वरूण है। वरूण ईश्वर का सब वरण करते हैं। विदुषी आचार्या ने प्राण और अपान की चर्चा की और कहा कि अपान वायु हमारे शरीर से गन्दगी को बाहर निकालती है। आचार्याजी ने कहा कि प्राण लेने व छोड़ने मात्र से काम नहीं चलेगा। उन्होंने कहा कि दुर्गुणों को दूर करके ही हम अच्छे बन सकते हैं – दुरितानि परासुव।

उन्होंने कहा कि मलिनताओं को दूर करना चाहिये तभी अच्छाईयों को धारण कर सकेंगे। आगे विदुषी आचार्या ने कहा कि वेद के अनुकूल जो भी है वह मान्य है और जो प्रतिकूल है वह मान्य नहीं है। यह महर्षि दयानन्द के जीवन भर के अध्ययन का सार है। आगे आर्य विदुषी बहिन ने कहा कि वेद ही मान्य धर्म ग्रन्थ हैं और स्वतः प्रमाण है। अन्य ग्रन्थ वेदानुकूल होने पर परतः प्रमाण हैं। इसके साथ यदि कोई मान्यता या सिद्धान्त वेद विरूद्ध है तो वह अमान्य व अस्वीकार्य है। उन्होंने बताया कि जिन ग्रन्थों में वेद विरूद्ध मान्यतायें है वह पढ़ने योग्य नहीं है। आचार्या नन्दिता शास्त्री ने कहा कि धर्माचरण करने से निम्न वर्ण वाला व्यक्ति भी उत्तम वर्ण वाला हो

जाता है और धर्माचरण न करने से उत्तम वर्ण वाला निम्न वर्ण वाला हो जाता है। मनुष्य के दो जन्म होते हैं, एक माता से और दूसरा आचार्य से जो ज्ञान देता है। जिसने विधिवत् आचार्य से अध्ययन नहीं किया है वह द्विज नहीं हो सकता। श्री शंकराचार्य जी का उल्लेख कर विदुषी आचार्या ने कहा कि जो हृदय में बैठे हुए भगवान को छोड़कर जगह–जगह ठोकर खाता है वह मनुष्य बुद्धिहीन होता है। मनुष्य को प्राणायाम करना चाहिये जिससे शरीर के मल दूर होते हैं। उन्होंने कहा कि वेदों में वसिष्ठ प्राणों को कहा गया है। वसिष्ठ व ऋषि बसाने वाला होता है। हम वसिष्ठ अर्थात् जल, अग्नि, वारयु, ऊर्जा, तेज का अपने अन्दर आभरण करें। उन्होंने कहा कि जल हमें जीवित व जागृत रखता है। वसिष्ठ अर्थात् हमारे प्राण मित्र व वरूण अर्थात् जल से उत्पन्न होते हैं। **हमें वेद के शब्दों के सही अर्थ जानने व समझने के साथ वेदार्थ को जानने का प्रयास करना चाहिये और प्रतिदिन स्वाध्याय करना चाहिये जिससे हमारा ज्ञान व बृद्धि में तेजस्विता उत्पन्न हो।**

प्रातः काल 5:00 बजे से स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती द्वारा योग व ध्यान साधना का अभ्यास कराया गया। इसके पश्चात यजुर्वेद के मन्त्रों से मुख्य वेदि सहित कुल 5 वेदियों में यज्ञ किया गया जिससे सारा वातावरण सुगन्धित एवं पवित्र हो गया। याज्ञिकों को आशीर्वाद देते हुए **यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती** ने कहा कि वेद मन्त्रों में प्रार्थना है कि हम सब प्राणियों को और सब प्राणी हमें मित्र की दृष्टि से देंखे। उन्होंने एक कथा सुनाते हुए बताया कि जंगल में एक शिकारी ने एक ग्रामीण महिला जिसके कन्धे व सिर पर पक्षी आकर प्रम पूर्वक बैठ रहे थे, पूछा कि पक्षी उस महिला पर क्यों बैठ रहे हैं? इसका उत्तर उस महिला ने दिया कि वह सभी पक्षियों को मित्र की दृष्टि से देखती है और उनका हनन न स्वयं करती है और न अन्य किसी को करने देती है। उस महिला ने उस शिकारी से पूछा कि जो इन पक्षियों को मारता है और खाता है, वह यह कैसे अपेक्षा कर सकता है कि उसके ऊपर कोई पक्षी बैठे? स्वामीजी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को यज्ञ, साधना एवं वैदिक धर्म की मान्यताओं का पालन करना चाहिये। उन्होंने कहा कि परमात्मा ने सभी प्राणियों को बिना किसी भेदभाव के बनाया है। सबके चेहरे एक जैसे हैं। मनुष्यों में भेद मनुष्यों ने ही किया है, परमात्मा ने नहीं। उन्होंने कहा कि जो भाई वैदिक मत छोड़ कर गये हैं व जाते हैं उसका कारण हमारे वेद प्रचार में कमी है। उन्होंने कहा कि प्राचीन वैदिक काल में सब लोग एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखते थे, वह कैसा स्वर्णिम काल रहा होगा? उन्होंने कहा कि घर में बुजुर्ग व माता–पिता आदि बच्चों को अच्छे संस्कार दें और गायत्री मन्त्र सहित सन्ध्या और अग्निहोत्र के मन्त्र याद करायें। आशीर्वाद से पूर्व और बहिन डा. नन्दिता शास्त्री के प्रवचन के पश्चात **आर्य जगत के ख्याति प्राप्त युवा भजनोपदेशक श्री दिनेश पथिक के 1 पंजाबी भजन सहित 3 मनोहर भजन हुए जिन्हें सुनकर धर्मप्रेमी श्रद्धालु लोग भाव विभोर हो गये।**

आयोजन के दूसरे सत्र में एक युवा सम्मेलन का अयोजन सम्पन्न हुआ जिसका संचालन आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान आचार्या आशीष दर्शनाचार्य ने किया। सम्मेलन में तपोवन विद्या निकेतन और राजकीय इन्टर कालेज, नालापानी के छात्र बड़ी संख्या में सम्मलित हुए। सम्मेलन का विषय था – **''वेद ही ईश्वरीय ज्ञान क्यों है?''।** आचार्य आशीष ने कहा कि जब हम कोई यन्त्र आदि खरीदते हैं तो हमें उसका उपयोग करने की विधि बताई जाती है। इसी प्रकार से ईश्वर ने संसार बनाकर और मनुष्यों को उत्पन्न करके जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए चार ऋषियों को वेदों का ज्ञान दिया था। उन्होंने प्रश्नोत्तर शैली में विद्यार्थियों से प्रश्न पूछें जिससे यह सिद्ध हुआ कि संसार में सबसे प्राचीन धार्मिक पुस्तक वेद है। विद्यार्थी गौरव ने अपने सम्बोधन में कहा कि संसार में ऐसा कोई ज्ञान नहीं है जो वेदों में न हो। उन्होंने कहा कि स्वयं वेदवाणी वेदों की उत्पत्ति ईश्वर से बताती है। गुरूकुल पौधा, देहरादून के ब्रह्मचारी अनुज ने भी सम्मेलन में अपने प्रभावशाली सारगर्भित विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि ईश्वर ने सृष्टि की आदि में चार ऋषियों के अन्तःकरण में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का ज्ञान भाषा सहित प्रकट किया था। द्रोणस्थली कन्या गुरूकुल की छात्रा दीप्ती आर्या ने कहा कि प्रत्यक्ष, अनुमान और आप्त प्रमाणों से किसी पक्ष की सिद्धि की जाती है। हमारे वेद, उपनिषद एवं दर्शन में तर्कपूर्वक शब्दों में वेदों को ईश्वर

प्रदत्त कहा गया है जिससे सिद्ध होता है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार अंकुर बीज में पहले से विद्यमान होता है इसी प्रकार से वेद भी ईश्वर में सदा से विद्यमान रहते हैं जिन्हें ईश्वर सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों पर प्रकट करता है। वेदों के अध्ययन से सिद्ध होता है कि वेदों का ज्ञान सर्वज्ञ सत्ता ईश्वर का दिया हुआ ज्ञान है। उन्होंने कहा कि पाश्चात्य विद्वान मैक्समूलर तक ने वेदों को सृष्टिकर्ता ईश्वर का ज्ञान स्वीकार किया है। उन्होंने वेदों को अपौरूषेय अर्थात् मनुष्यों से इसकी रचना असम्भव होने से ईश्वर प्रदत्त ज्ञान बताया। तपोवन विद्या निकेतन की कक्षा 5 की छात्रा तनु बाला ने अपने प्रभावशाली सम्बोधन में कहा कि वेद सबसे पुराना धर्म ग्रन्थ है। संसार की सब विद्यायें वेदों से निकली हैं। उन्होंने कहा कि वैदिक काल में विश्व के सभी लोग ईश्वर के निराकार स्वरूप को मानते थे और वही इस सृष्टि और ज्ञान विज्ञान का आधार है। सम्मेलन में गुरूकुल पौधा के आचार्य डा. धनंजय ने पांच कसौटियां बताईं और कहा कि वेदों का ज्ञान इन कसौटियों पर खरा उतरता है। पहली कसौटी, वेद की सभी मान्यतायें एवं सिद्धान्त सत्य है, कोई असत्य व मिथ्या सिद्धान्त वेदों में नहीं है। दूसरी कसौटी, वेदों का ज्ञान सृष्टि क्रम के अनुरूप व अनुकूल है प्रतिकूल नहीं। तीसरी कसौटी, वेद का ज्ञान सभी आर्ष गन्थों के अनुरूप ही नहीं है अपितु उसका आधार भी है। यह विज्ञान से भी पोषित है। चौथी कसौटी, वेदों का ज्ञान हमारी आत्मा के अनुकूल है। इसके उदाहरण भी विद्वान आचार्य ने दिए। पांचवी कसौटी, वेदों का ज्ञान 8 प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध है। युवा सम्मेलन के प्रणेता आचार्य आशीष जी ने कहा कि वेद का ज्ञान सृष्टि की आदि में मनुष्यों को मिला होने से यह ईश्वरीय है। अन्य ज्ञान बाद में मिले जिनमें इतिहास भरा पड़ा है जबकि वेदों में इतिहास नहीं है। उन्होंने कहा कि जिस पुस्तक में इतिहास होगा वह सबसे पुरानी पुस्तक नहीं हो सकती। उन्होंने आगे कहा कि ईश्वरीय पुस्तक या ज्ञान की प्रत्येक बात विज्ञान की पोषक होती है विरोधी नहीं। वेद ही इस कसौटी पर खरे उतरते हैं। समापन करते हुए उन्होंने कहा कि यद्यपि सभी ग्रन्थों में अच्छी बाते हैं परन्तु ईश्वरीय ज्ञान केवल वेद ही हैं। युवा सम्मेलन को डा. विनोद कुमार शर्मा ने भी सम्बोधित किया। सभी आयोजनों में बड़ी संख्या में नर–नारी उपस्थित थे जो देश भर से यहां पधारे हैं।

– इं. प्रेम प्रकाश शर्मा, महामंत्री / मन मोहन कुमार आर्य
वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरादून।